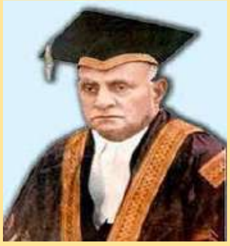

प्रतिवेदन

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

21 फरवरी 2022

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विशेष

राष्ट्रीय अस्मिता का द्योतक: अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

- प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) सागर (मध्यप्रदेश)

पूरे विश्व में 21 फरवरी अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। किसी भी देश की राष्ट्रीय अस्मिता तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक मातृभाषा होती है। 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प सर्वप्रथम बांग्लादेश द्वारा किया गया। यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को) की आमसभा ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प नवंबर 1999 में लिया जिसे यूनाइटेड नेशन्स की आमसभा ने 2002 में इसका स्वागत किया। 16 मई, 2007 को यूनाइटेड नेशन्स ने यह संकल्प लिया कि समस्त देशों कोमातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाये। आज 21 फरवरी एक अंतर्राष्ट्रीय वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों से आदान-प्रदान करसकते हैं और वह हमारी भौतिक और अभौतिक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर इसे शक्तिशाली बनाये रखती है। मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी कदम न केवल भाषा के विविध बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए, बल्कि दुनिया भर को प्रोत्साहित कर जागरूकता विकसित करने और समझ और संवाद के आधार पर एकजुटता को प्रदर्शित करने के लिए है।

पूरे विश्व में हर 14 दिन में कोई एक भाषा विलुप्त हो रही है, और अपने देश भारत में भी स्थिति अच्छी नहीं है। भारत में कुल 19,500 भाषायें बोली जाती हैं जिनमें से करीब 2,900 विलुप्त होने की कगार पर हैं। सत्य तो यह है कि इन भाषाओं को मात्र 100 या इससे कम लोग बोलते हैं। मात्र 121 भाषाएँ 10,000 से अधिक लोग बोलते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि 121 भाषाओं में 99 भाषायें भारत के 3.3 प्रतिशत लोग ही बोलते हैं और बाकी 22 भाषायें भारत के 96.7 प्रतिशत लोग बोलते हैं और यही 22 भाषायें हैं जिन्हें भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है।

यह आंकड़े हमें स्पष्ट बताते हैं कि हमें अपनी मातृभाषा के विस्तार के लिए पूर्ण प्रयास करने होंगे और यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हमारी भाषा भी उसी सूची में शामिल होगी जो हर 14 दिन में विलुप्त हो रही है। मातृभाषा उसे कहते हैं जिस भाषा को बच्चा जिंदगी में पहली बार बोलता है। बच्चा बचपन में अधिकतर अपनी माँ के पास ही रहता है, और स्वाभाविक है कि माँ जो भाषा बोलती है, बच्चा भी उसी को सीखता है और बोलता है। हर मातृभाषा की कुछ खासियत होती है और मुख्यतः वह तीन चीजों को जोड़ती है: सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा और इतिहास।

ज्यादातर लोगों के लिए यह मात्र एक भाषा है लेकिन बहुभाषी परिवारों में बच्चा एक साथ दो भाषा सीख सकता है,परन्तु ऐसा होने पर राजनीतिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता को प्राथमिकता दी जा सकती है। हम यह भी कह सकते हैं कि यह हमारी मूल भाषा है या हम इसे ऐसे भी परिभाषित कर सकते हैं कि एक भाषा जिससे दूसरी भाषा निकलती है उसे मातृभाषा कहा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस भाषा संबंधी और सांस्कृतिक विविधता में जागरूकता को बढ़ावा देने और

बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए 21 फरवरी एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस उत्सव के रूप में मनाया जाता है जिससे कि भाषायी और सांस्कृतिक विविधता बहुभाषिकता को बढ़ावा दे सके और उसका निरंतर विकास कर सकें। विश्व के किसी भी देश में प्राथमिक शिक्षा विदेशी भाषा में नहीं दी जाती। विश्व के परिप्रेक्ष्य में लगभग सभी उन्नत एवं विकसित देशों में वहाँ की शिक्षा, शोध कार्यों, शासन-प्रशासन की भाषा वहाँ की भाषा होती है और अपने देश में भी ऐसे ही भाव को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे कि सभी कार्य मातृभाषा में हों। भारत के महापुरूषों, शिक्षाविदों जैसे विनोबा भावे, महात्मा गाँधी, पं. मदन मोहन मालवीय, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के भी यहीं विचार थे। पूर्व में किए गए अध्ययन यहीं बताते हैं कि अपनी भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने से चिंतन एवं विचारों में मनोवैज्ञानिकता एवं सृजनात्मकता आती है और कठिन विषय भी सुगमता से समझ में आ जाते हैं।

इस वर्ष अपना देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, इन सपनों को साकार करने में अन्य घटकों के साथ-साथ हिंदी की भी महती भूमिका रही है। भारत में अनेक भाषाओं का समागम है, अतः देश में एकरूपता लाने के लिए पूरे देश में एक भाषा को प्रयोग में लाना चाहिए। लोकमान्य तिलक ने हिंदी के संबंध में विचारों में लिखा है –"यह तो उस आंदोलन का अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूँगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है"। कुछ इसी प्रकार के विचार भारतेन्दु हरिश्चंद्र के रहे हैं जिन्होंने लिखा हैः-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

महात्मा गाँधी ने अपने पत्र हिंदी नवजीवन में लिखा है "इस विदेशी भाषा (अंग्रेजी) के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है, उनके स्नायुओं पर अनावश्यक जोर डाला है उन्हें रट्टू और नकलची बना दिया है तथा मौलिक कार्यों और विचारों के लिए सर्वथा अयोग्य बना दिया है"।

एक तरफ जहाँ हिंदी सिनेमा खरबों रूपयों की इंडस्ट्री है तो दूसरी तरफ देश के सर्वाधिक पठित अखबार हिंदी के हैं। यदि हम टेलीविजन की बात करें तो दो तिहाई चैनल हिंदी के हैं और सर्वाधिक देखे जाने वाले चैनलों में हिंदी आगे है। विज्ञापन में भी हिंदी का बोलबाला है और यह भी प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भाषा नीति को प्रोत्साहित किया गया है और एक तरफ जहाँ हम भारत में हिन्दी और मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ पूरी दुनिया में 200 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। डिजिटल इंडिया के अंतर्गत मोबाइल एप्स आदि में भी हिंदी की अपार संभावनायें हैं। गूगल का अनुमान है कि वर्ष 2024 तक भारत में अंग्रेजी की तुलना में हिंदी माध्यम से इंटरनेट का प्रयोग करने वालों की संख्या कहीं अधिक होगी। पुस्तक प्रकाशक किताबों के प्रिंट वर्जन के साथ-साथ आडियो डिजिटल वर्जन भी हिंदी में प्रकाशित कर रहे हैं। आडियो किताबों का ई-वर्जन जैसी डिजिटल दुनिया ने हिंदी का एक नया संसार ही बना दिया है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में देश भर में प्रयास हो रहा है और इसे साकार करने में हिंदी की भी एक महती भूमिका होगी इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

आज अन्य देशों में भी हिंदी सीखने की जिज्ञासा बढ़ती जा रही है। हिंदी सिनेमा, हिंदी टेलीविजन के बढ़ते प्रसार ने हिंदी सीखने की चाहत को कई गुना बढ़ा दिया है। आज पूरे विश्व में कोई योग को समझने के लिए, कोई भारतीय अध्यात्म को समझने के लिए हिंदी को सीखने का प्रयास कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर यह आवश्यक है कि मातृभाषा में आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के साथ-साथ उच्च शिक्षा में भी हिंदी भाषा प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किये जायें तथा सभी संस्थानों मेंहिंदी को प्रोत्साहित किया जाये। हिंदी ज्ञान, विज्ञान, चिंतन, परंपरा की भाषा एवं उचित माध्यम बने।भाषा का ज्ञान, ज्ञान का द्वार है। इस अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर, आइए, हम सभी संकल्प लें कि हम अपनी मातृभाषा का सम्मान करें क्योंकि:

मातृभाषा का सम्मान, देश का सम्मान है, हमारी स्वतंत्रता वहाँ है, मातृभाषा जहाँ है। इसी सम्मान से हम अपने देश, भारत का सम्मान बढ़ाने में और नए भारत की संरचना करने में सफल होंगे।

मातृभाषा दिवस की पूर्वसंध्या पर विश्वविद्यालय में परिचर्चा का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की पूर्व संध्या पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में मुख्य अतिथि के बतौर पधारे प्रख्यात भाषाविद एवं चिंतक प्रो वृषभ प्रसाद जैन ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में मातृभाषा के उपयोगी पक्ष पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मातृभाषा में पढ़ाई का मतलब अंग्रेजी से विरोध नहीं है। हमें अपनी परंपरा को संजोते हुए भाषा के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। भाषा की समृद्धि ही हमारी समृद्धि है। उन्होंने कहा कि मातृभाषा में पढ़ाई तब तक नहीं संभव है जब तक हम जनपदीय भाषाओं को लिखने का कोई तरीका नहीं विकसित कर लेते। सभी जनपदीय भाषाओं के उच्चारण अलग-अलग हैं, इसलिए बिना इसके लिखे जाने के तरीके को खोजे हम कोई पाठ्यक्रम विकसित नहीं कर पाएंगे।

उन्होंने कहा कि भारत में क्षेत्रीय भाषा के विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी भाषा को सीखने का भी वैज्ञानिक तरीका नहीं है। हम पश्चिमी पैटर्न पर ही अंग्रेजी के व्याकरण आदि को सिखाते हैं। आज सबसे बड़ी जरूरत है कि लोक में व्याप्त भारतीय ज्ञान को भारतीय भाषा में लाया जाए और विभिन्न पाठ्यक्रम तैयार किये जायें। इस माध्यम से ही हम मातृभाषा के संबंध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन ठीक ढंग से कर पाएंगे। यही एक सूत्र है जिससे हम सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा दे पाएंगे। मानसिक और जातीय चेतना जिस भाषा के माध्यम से विकसित हुई वही मातृभाषा है।

इस अवसर पर प्रो अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि मनुष्य होने का अर्थ ही भाषा में होना है। हमारे ऊपर अंग्रेजी का एक अलौकिक साम्राज्य आरोपित किया गया। भारत का राष्ट्रीय चरित्र बहुभाषिक रहा है। अंग्रेजी के आने से भारत की बहुभाषिक संस्कृति में विघटन पैदा हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान हमें इस विघटन से बचाएगा। इससे हम अंग्रेजी से लड़ने का तरीका भी ईजाद कर पाएंगे और अपनी मातृभाषा को बढ़ावा भी दे पाएंगे।

परिचर्चा सत्र का संचालन डॉ अरविंद गौतम ने किया। आयोजन में भाषा विज्ञान की अध्यक्षा प्रो चंदा बेन, भाषा अध्ययनशाला के डीन प्रो बी आई गुरु, डॉ संजय शर्मा, डॉ आशुतोष, डॉ अभिज्ञान द्विवेदी, डॉ राजेन्द्र यादव, डॉ पंकज तिवारी, डॉ छबील मेहेर, डॉ हिमांशु, विवेक विसारिया, डॉ शशि सिंह, डॉ सुखदेव बाजपेयी, डॉ आर पी सिंह, डॉ अरविंद एवं शोधार्थी, विद्यार्थी उपस्थित थे।

आमंत्रण
आज़ादी का अमृत महोत्सव
मातृभाषा दिवस
सोमवार, 21 फरवरी, 2022
के अवसर पर आयोजित व्याख्यान
हमारी मातृभाषाएँ
सान्निध्य
प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा
अधिष्ठाता छात्र कल्याण
संयोजक
प्रो. चंदा बैन
नोडल अधिकारी
मातृभाषा दिवस कार्यक्रम
मुख्य वक्ता
प्रो. वृषभ प्रसाद जैन
प्रख्यात भाषाविद् एवं चिंतक
अध्यक्षता
प्रो. नीलिमा गुप्ता
माननीया कुलपति
स्थान : जवाहरलाल नेहरू केन्द्रीय ग्रंथालय सभागार
समय : प्रात: 11.30 बजे
आयोजक
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस कार्यक्रम का आयोजन

मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव है - प्रो. वृषभ प्रसाद जैन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी 2022 के अवसर पर 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है. व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है.

उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आज़ादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है. केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है. भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है. हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं. आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात की जा रही है. भाषायी स्वतन्त्रता के साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी जुडी हुई है. इस बात को उन्होंने आंकड़ों और उदाहरणों के माध्यम से समझाया. उन्होंने कहा कि भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है. इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है. भारतीय भाषा के फॉण्ट निर्माण का काम आज विदेशी कम्पनियां कर रही हैं. भाषायी रूप से समृद्ध होने के बावजूद हम भारतीय भाषाओं के फॉण्ट निर्माण में भी पीछे हैं. भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है. उन्होंने कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये. उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है.

सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास को एक सूत्र में बांधती है भाषा- प्रो. नीलिमा गुप्ता

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है. पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह 'माँ' सीखता है. इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता. उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया. भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हज़ार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं. इस तरह 22 प्रमुख भाषाएँ जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया. मातृभाषा की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज़्यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है. सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास इन तीनों को भाषा ही बाँध कर रखती है. उन्होंने आकड़ों के माध्यम से विश्व में हिंदी भाषा की स्थिति पर बात रखते हुए कहा कि आज दो तिहाई आबादी हिंदी समाचार पत्र पढ़ रही है व विश्व भर के सिनेमाघरों में हिंदी सिनेमा प्रदर्शित होती है. कोविडकाल के दौरान जब सभी चीज़ों का डिजिटलीकरण हुआ उसके साथ हिंदी भाषा की भी तकनीक में सहभागिता बढ़ी है. गूगल के आकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 तक हिंदी में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या अंग्रेज़ी से ज्यादा

रहेगी. अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने हिंदी भाषा की विविधता को सरलता से समझाया और सभी को मातृभाषा के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए संकल्पित होने का संदेश दिया.

भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चन्दा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया और कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है. उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भाषा संबंधों को अधिक प्रगाढ़ बनाने का प्रावधान किया है. छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा कि इस वर्ष मातृभाषा दिवस आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आया है. आज़ादी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है. पहला- राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा-वैचारिक स्वराज और तीसरा-भाषायी स्वराज की प्राप्ति. भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्त्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है. उन्होंने प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उद्धरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया.

व्याख्यान के उपरांत मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित 'आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं 'बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया.

कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ आशुतोष ने ज्ञापित किया. आयोजन में प्रो. बीआई. गुरु, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. उमेश पाटिल, डॉ राकेश सोनी, डॉ अलीम खान, डॉ हिमांशु, विवेक विसारिया, डॉ शशि सिंह, डॉ. अरविन्द, डॉ मुकेश साहू सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

प्रकाशित आलेख

राष्ट्रीय सहारा, राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिल्ली, पटना, कानपुर, लखनऊ, देहरादून, वाराणसी, गोरखपुर संस्करणों में प्रकाशित

राष्ट्रीय सहारा लखनऊ | रविवार • 20 फरवरी • 2022 | www.rashtriyasahara.com

प्रो. नीलिमा गुप्ता

राष्ट्रीय अस्मिता का द्योतक

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

पूरे विश्व में 21 फरवरी अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। 16 मई, 2007 को यूनाइटेड नेशंस ने संकल्प लिया कि समस्त देशों को मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विश्व में हर 14 दिन में कोई एक भाषा विलुप्त हो रही है, और भारत में भी स्थिति अच्छी नहीं है। भारत में कुल 19,500 भाषाएं बोली जाती हैं। इनमें से करीब 2,900 विलुप्त होने की कगार पर हैं। मात्र 121 भाषाएं 10,000 से अधिक लोग बोलते हैं। आश्चर्य की बात है कि 121 भाषाओं में 99 भाषाएं भारत के 3.3 प्रतिशत लोग ही बोलते हैं और बाकी 22 भाषाएं भारत के 96.7 प्रतिशत लोग बोलते हैं और यही 22 भाषाएं हैं, जिन्हें संविधान की 8वीं अनुसूची में आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। मातृभाषा उसे कहते हैं जिस भाषा को बच्चा जिंदगी में पहली बार बोलता है। बच्चा बचपन में अधिकतर अपनी मां के पास ही रहता है, और स्वाभाविक है कि मां जो भाषा बोलती है, बच्चा भी उसी को सीखता और बोलता है। हर मातृभाषा मुख्यतः तीन चीजों को जोड़ती है: सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा और इतिहास। ज्यादातर लोगों के लिए यह मात्र भाषा है लेकिन बहुभाषी परिवारों में बच्चा एक साथ दो भाषा सीख सकता है परंतु ऐसा होने पर राजनीतिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता को प्राथमिकता दी जा सकती है। हम यह भी कह सकते हैं कि यह हमारी मूल भाषा है, या हम इसे ऐसे भी परिभाषित कर सकते हैं कि एक भाषा जिससे दूसरी भाषा निकलती है, उसे मातृभाषा कहा जाता है।

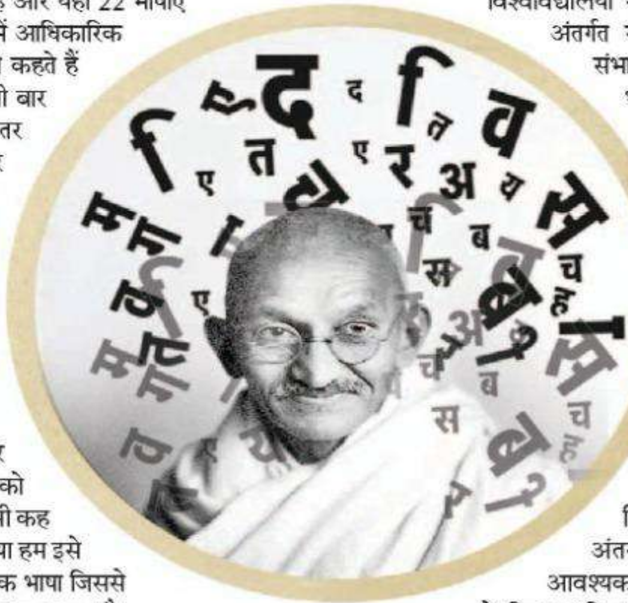

इस वर्ष भारत आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, इन सपनों को साकार करने में अन्य घटकों के साथ-साथ हिंदी की भी महती भूमिका रही है। भारत में अनेक भाषाओं का समागम है, अतः देश में एकरूपता लाने के लिए पूरे देश में एक भाषा को प्रयोग में लाया जाना चाहिए। लोकमान्य तिलक ने हिंदी के संबंध में अपने विचारों में लिखा है-यह तो उस आंदोलन का अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूंगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्त्वपूर्ण अंग है। कुछ इसी प्रकार के विचार भारतेन्दु हरिश्चंद्र के रहे जिन्होंने लिखा है:-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

महात्मा गांधी ने अपने पत्र हिंदी नवजीवन में लिखा है-इस विदेशी भाषा (अंग्रेजी) के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है, उनके स्नायुओं पर अनावश्यक जोर डाला है, उन्हें रट्टू और नकलची बना दिया है तथा मौलिक कार्यों और विचारों के लिए सर्वथा अयोग्य बना दिया है।

एक तरफ जहां हिंदी सिनेमा खरबों रुपये की इंडस्ट्री है, तो दूसरी तरफ देश के सर्वाधिक पठित अखबार हिंदी के हैं। दो तिहाई चैनल हिंदी के हैं। विज्ञापन में भी हिंदी का बोलबाला है। हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भाषा नीति को प्रोत्साहित किया गया है। पूरी दुनिया में 200 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। डिजिटल इंडिया के अंतर्गत मोबाइल एप्स आदि में भी हिंदी की अपार संभावनाएं हैं। गूगल का अनुमान है कि 2024 तक भारत में अंग्रेजी की तुलना में हिंदी माध्यम से इंटरनेट का प्रयोग करने वालों की संख्या कहीं अधिक होगी। पुस्तक प्रकाशक किताबों के प्रिंट वर्जन के साथ-साथ ऑडियो डिजिटल वर्जन भी हिंदी में प्रकाशित कर रहे हैं। ऑडियो किताबों के ई-वर्जन जैसी डिजिटल दुनिया ने हिंदी का नया संसार ही रच दिया है। अन्य देशों में भी हिंदी सीखने की जिज्ञासा बढ़ती जा रही है। हिंदी सिनेमा, हिंदी टेलीविजन के बढ़ते प्रसार ने हिंदी सीखने की चाहत को बढ़ा दिया है। पूरे विश्व में कोई योग को समझने के लिए, कोई भारतीय अध्यात्म को समझने के लिए हिंदी सीखने का प्रयास कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर आवश्यक है कि मातृभाषा में आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के साथ-साथ उच्च शिक्षा में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किए जाएं। हिंदी ज्ञान, विज्ञान, चिंतन, परंपरा की भाषा एवं उचित माध्यम बने। भाषा का ज्ञान, ज्ञान का द्वार है। इस अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आइए, हम सभी संकल्प लें कि हम अपनी मातृभाषा का सम्मान करेंगे क्योंकि :

मातृभाषा का सम्मान, देश का सम्मान है,
हमारी स्वतंत्रता वहां है, मातृभाषा जहां है।
इसी सम्मान से हम नये भारत की संरचना करने में सफल होंगे।

(लेखिका डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति हैं)

स्वदेश, राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

ग्वालियर, भोपाल, झांसी, लखनऊ, गुना, सतना, रीवा, आगरा संस्करणों में प्रकाशित

प्रो. नीलिमा गुप्ता

अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

राष्ट्रीय अस्मिता की द्योतक मातृभाषा

पूरे विश्व में 21 फरवरी अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। किसी भी देश की राष्ट्रीय अस्मिता तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक मातृभाषा होती है। 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प सर्वप्रथम बांग्लादेश द्वारा किया गया। यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को) की आमसभा ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प नवंबर 1999 में लिया जिसे यूनाइटेड नेशन्स की आमसभा ने 2002 में इसका स्वागत किया। 16 मई, 2007 को यूनाइटेड नेशन्स ने यह संकल्प लिया कि समस्त देशों को मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाये। आज 21 फरवरी एक अंतर्राष्ट्रीय वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को एक-दूसरों से आदान-प्रदान कर सकते हैं और वह हमारी भौतिक और अभौतिक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर इसे शक्तिशाली बनाये रखती है। मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी कदम न केवल भाषा के विविध बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए, बल्कि दुनिया भर को प्रोत्साहित कर जागरूकता विकसित करने और समझ और संवाद के आधार पर एकजुटता को प्रदर्शित करने के लिए हैं।

पूरे विश्व में हर 14 दिन में कोई एक भाषा विलुप्त हो रही है, और अपने देश भारत में भी स्थिति अच्छी नहीं है। भारत में कुल 19,500 भाषायें बोली जाती हैं जिनमें से करीब 2,900 विलुप्त होने की कगार पर हैं। सत्य तो यह है कि इन भाषाओं को मात्र 100 या इससे कम लोग बोलते हैं। मात्र 121 भाषाएँ 10,000 से अधिक लोग बोलते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि 121 भाषाओं में 99 भाषायें भारत के 3.3 प्रतिशत लोग ही बोलते हैं और बाकी 22 भाषायें भारत के 96.7 प्रतिशत लोग बोलते हैं और यही 22 भाषायें हैं जिन्हें भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। यह आंकड़े हमें स्पष्ट बताते हैं कि हमें अपनी मातृभाषा के विस्तार के लिए पूर्ण प्रयास करने होंगे और यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हमारी भाषा भी उसी सूची में शामिल होगी जो हर 14 दिन में विलुप्त हो रही है।

विश्व के किसी भी देश में प्राथमिक शिक्षा विदेशी भाषा में नहीं दी जाती। विश्व के परिप्रेक्ष्य में लगभग सभी उन्नत एवं विकसित देशों में वहाँ की शिक्षा, शोध कार्यों, शासन-प्रशासन की भाषा वहाँ की भाषा होती है और अपने देश में भी ऐसे ही भाव को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे कि सभी कार्य मातृभाषा में हों। भारत के महापुरूषों, शिक्षाविदों जैसे विनोबा भावे, महात्मा गाँधी, पं. मदन मोहन मालवीय, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के भी यहीं विचार थे। पूर्व में किए गए अध्ययन यहीं बताते हैं कि अपनी भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने से चिंतन एवं विचारों में मनोवैज्ञानिकता एवं सृजनात्मकता आती है और कठिन विषय भी सुगमता से समझ में आ जाते हैं। इस वर्ष अपना देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, इन सपनों को साकार करने में अन्य घटकों के साथ-साथ हिंदी की भी महती भूमिका रही है। भारत में अनेक भाषाओं का समागम है, अतः देश में एकरूपता लाने के लिए पूरे देश में एक भाषा को प्रयोग में लाना चाहिए। लोकमान्य तिलक ने हिंदी के संबंध में विचारों में लिखा है -यह तो उस आंदोलन का अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूंगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है।

कुछ इसी प्रकार के विचार भारतेन्दु हरिश्चंद्र के रहे हैं जिन्होंने लिखा है:-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

महात्मा गाँधी ने अपने पत्र हिंदी नवजीवन में लिखा है- इस विदेशी भाषा (अंग्रेजी) के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है, उनके स्नायुओं पर अनावश्यक जोर डाला है उन्हें रट्टू और नकलची बना दिया है तथा मौलिक कार्यों और विचारों के लिए सर्वथा अयोग्य बना दिया है। एक तरफ जहां हिंदी सिनेमा खरबों रूपयों की इंडस्ट्री है तो दूसरी तरफ देश के सर्वाधिक पठित अखबार हिंदी के हैं। यदि हम टेलीविजन की बात करें तो दो तिहाई चैनल हिंदी के हैं और सर्वाधिक देखे जाने वाले चैनलों में हिंदी आगे है। विज्ञापन में भी हिंदी का बोलबाला है और यह भी प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भाषा नीति को प्रोत्साहित किया गया है और एक तरफ जहाँ हम भारत में हिन्दी और मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ पूरी दुनिया में 200 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। डिजिटल इंडिया के अंतर्गत मोबाइल एप्स आदि में भी हिंदी की अपार संभावनायें हैं। गूगल का अनुमान है कि वर्ष 2024 तक भारत में अंग्रेजी की तुलना में हिंदी माध्यम से इंटरनेट का प्रयोग करने वालों की संख्या कहीं अधिक होगी। पुस्तक प्रकाशक किताबों के प्रिंट वर्जन के साथ-साथ आडियो डिजिटल वर्जन भी हिंदी में प्रकाशित कर रहे हैं। आडियो किताबों का ई-वर्जन जैसी डिजिटल दुनिया ने हिंदी का एक नया संसार ही बना दिया है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में देश भर में प्रयास हो रहा है और इसे साकार करने में हिंदी की भी एक महती भूमिका होगी इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

(लेखिका डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) सागर (मप्र) की कुलपति हैं)

राजस्थान पत्रिका, राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

सागर संस्करण में प्रकाशित

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस आज

'मातृभाषा होती है राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक'

पत्रिका क्या आप जानते हैं

सागर. पूरे विश्व में 21 फरवरी अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। किसी भी देश की राष्ट्रीय अस्मिता तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक मातृभाषा होती है। इसे मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प सर्वप्रथम बांग्लादेश द्वारा किया गया। यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन की आमसभा ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प नवंबर 1999 में लिया, जिसे यूनाइटेड नेशन्स की आमसभा ने 2002 में इसका स्वागत किया।

16 मई 2007 को यूनाइटेड नेशन्स ने यह संकल्प लिया कि समस्त देशों को मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। यह दिन अंतर्राष्ट्रीय वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों से आदान-प्रदान कर सकते हैं और वह हमारी भौतिक और अभौतिक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर इसे शक्तिशाली बनाए रखती है। मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी कदम न केवल भाषा के विविध बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए बल्कि दुनिया भर को प्रोत्साहित कर जागरूकता विकसित करने और समझ और संवाद के आधार पर एकजुटता को प्रदर्शित करने के लिए है। पूरे विश्व में हर 14 दिन में कोई एक भाषा विलुप्त हो रही है और अपने देश भारत में भी स्थिति अच्छी नहीं है। भारत में कुल 19,500 भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से करीब 2,900 विलुप्त होने की कगार पर हैं। सत्य तो यह है कि इन भाषाओं को मात्र 100 या इससे कम लोग बोलते हैं। मात्र 121 भाषाएँ 10,000 से अधिक लोग बोलते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि 121 भाषाओं में 99 भाषाएं भारत के 3.3 प्रतिशत लोग ही बोलते हैं और बाकी 22 भाषाएं भारत के 96.7 प्रतिशत लोग बोलते हैं और यही 22 भाषाएं हैं, जिन्हें भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। यह आंकड़ें हमें स्पष्ट बताते हैं कि हमें अपनी मातृभाषा के विस्तार के लिए पूर्ण प्रयास करने होंगे और यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हमारी भाषा भी उसी सूची में शामिल होगी जो हर 14 दिन में विलुप्त हो रही है।मातृभाषा उसे कहते हैं जिस भाषा को बच्चा जिंदगी में पहली बार बोलता है। बच्चा बचपन में अधिकतर अपनी माँ के पास ही रहता है, और स्वाभाविक है कि माँ जो भाषा बोलती है, बच्चा भी उसी को सीखता है और बोलता है। हर मातृभाषा की कुछ खासियत होती है और मुख्यत: वह 3 चीजों को जोड़ती है।

- नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि

भारतेन्दु हरिश्चंद्र जिन्होंने लिखा है...

निज भाषा उन्नति अहै सब
उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न
हिय को सूल।।

महात्मा गांधी ने अपने पत्र हिंदी नवजीवन में लिखा है इस विदेशी भाषा, अंग्रेजी के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है। एक तरफजहां हिंदी सिनेमा खरबों रूपयों की इंडस्ट्री है तो दूसरी तरफदेश के सर्वाधिक

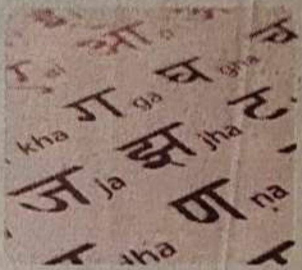

पठित अखबार हिंदी के हैं। यदि हम टेलीविजन की बात करें तो दो तिहाई चैनल हिंदी के हैं और सर्वाधिक देखे जाने वाले चैनलों में हिंदी आगे है।

देशबंधु, राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

सागर संस्करण में प्रकाशित

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विशेष

राष्ट्रीय अस्मिता का द्योतक है अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस : प्रो. नीलिमा गुप्ता

सागर, देशबन्धु। पूरे विश्व में 21 फरवरी अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। किसी भी देश की राष्ट्रीय अस्मिता तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक मातृभाषा होती है। 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प सर्वप्रथम बांग्लादेश द्वारा किया गया। यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल, साईंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को) की आमसभा ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प नवंबर 1999 में लिया जिसे यूनाइटेड नेशन्स की आमसभा ने 2002 में इसका स्वागत किया। 16 मई, 2007 को यूनाइटेड नेशन्स ने यह संकल्प लिया कि समस्त देशों को मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों से आदान-प्रदान कर सकते हैं और वह हमारी भौतिक और अभौतिक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर इसे शक्तिशाली बनाये रखती है। मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी कदम न केवल भाषा के विविध बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए, बल्कि दुनिया भर को प्रोत्साहित कर जागरूकता विकसित करने और समझ और संवाद के आधार पर एकजुटता को प्रदर्शित करने के लिए है। पूरे विश्व में हर 14 दिन में कोई एक भाषा विलुप्त हो रही है, और अपने देश भारत में भी स्थिति अच्छी नहीं है। भारत में कुल 19,500 भाषायें बोली जाती हैं जिनमें से करीब 2,900 विलुप्त होने की कगार पर हैं। सत्य तो यह है कि इन भाषाओं को मात्र 100 या इससे कम लोग बोलते हैं। मात्र 121 भाषाएँ 10,000 से अधिक लोग बोलते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि 121 भाषाओं में 99 भाषायें भारत के 3.3 प्रतिशत लोग ही बोलते हैं और बाकी 22 भाषायें भारत के 96.7 प्रतिशत लोग बोलते हैं और यही 22 भाषायें हैं जिन्हें भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। यह आंकड़ें हमें स्पष्ट बताते हैं कि हमें अपनी मातृभाषा के विस्तार के लिए पूर्ण प्रयास करने होंगे और यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हमारी भाषा भी उसी सूची में शामिल होगी जो हर 14 दिन में विलुप्त हो रही है। मातृभाषा उसे कहते हैं जिस भाषा को बच्चा जिंदगी में पहली बार बोलता है।

बच्चा बचपन में अधिकतर अपनी माँ के पास ही रहता है, और स्वाभाविक है कि माँ जो भाषा बोलती है, बच्चा भी उसी को सीखता है और बोलता है। हर मातृभाषा की कुछ खासियत होती है और मुख्यत: वह 3 चीजों को जोड़ती है सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा और इतिहास। ज्यादातर लोगों के लिए यह मात्र एक भाषा है लेकिन बहुभाषी परिवारों में बच्चा एक साथ दो भाषा सीख सकता है, परन्तु ऐसा होने पर राजनीतिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता को प्राथमिकता दी जा सकती है। हम यह भी कह सकते हैं कि यह हमारी मूल भाषा है या हम इसे ऐसे भी परिभाषित कर सकते हैं कि एक भाषा जिससे दूसरी भाषा निकलती है उसे मातृभाषा कहा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस भाषा संबंधी और सांस्कृतिक विविधता में जागरूकता को बढ़ावा देने और बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए 21 फ़रवरी एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस उत्सव के रूप में मनाया जाता है जिससे कि भाषायी और सांस्कृतिक विविधता बहुभाषिकता को बढ़ावा दे सके और उसका निरंतर विकास कर सकें। विश्व के किसी भी देश में प्राथमिक शिक्षा विदेशी भाषा में नहीं दी जाती। विश्व के परिप्रेक्ष्य में लगभग सभी उन्नत एवं विकसित देशों में वहाँ की शिक्षा, शोध कार्यों, शासन-प्रशासन की भाषा वहाँ की भाषा होती है और अपने देश में भी ऐसे ही भाव को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे कि सभी कार्य मातृभाषा में हों। भारत के महापुरूषों, शिक्षाविदों जैसे विनोबा भावे, महात्मा गाँधी, पं. मदन मोहन मालवीय, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के भी यहीं विचार थे। पूर्व में किए गए अध्ययन यहीं बताते हैं कि अपनी भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने से चिंतन एवं विचारों में मनोवैज्ञानिकता एवं सृजनात्मकता आती है और कठिन विषय भी सुगमता से समझ में आ जाते हैं। लोकमान्य तिलक ने हिंदी के संबंध में विचारों में लिखा है 'यह तो उस आंदोलन का अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूँगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है क्योंकि सबके लिए समान भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है'। कुछ इसी प्रकार के विचार भारतेन्दु हरिश्चंद्र के रहे हैं जिन्होंने लिखा है:-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

महात्मा गाँधी ने अपने पत्र हिंदी नवजीवन में लिखा है 'इस विदेशी भाषा (अंग्रेजी) के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है, उनके स्नायुओं पर अनावश्यक जोर डाला है उन्हें रट्टू और नकलची बना दिया है तथा मौलिक कार्यों और विचारों के लिए सर्वथा अयोग्य बना दिया है।' एक तरफ जहां हिंदी सिनेमा खरबों रूपयों की इंडस्ट्री है तो दूसरी तरफ देश के सर्वाधिक पठित अखबार हिंदी के हैं। यदि हम टेलीविजन की बात करें तो दो तिहाई चैनल हिंदी के हैं और सर्वाधिक देखे जाने वाले चैनलों में हिंदी आगे है। विज्ञापन में भी हिंदी का बोलबाला है। आज अन्य देशों में भी हिंदी सीखने की जिज्ञासा बढ़ती जा रही है।

हिंदी सिनेमा, हिंदी टेलीविजन के बढ़ते प्रसार ने हिंदी सीखने की चाहत को कई गुना बढ़ा दिया है। आज पूरे विश्व में कोई योग को समझने के लिए, कोई भारतीय अध्यात्म को समझने के लिए हिंदी को सीखने का प्रयास कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर यह आवश्यक है कि मातृभाषा में आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के साथ-साथ उच्च शिक्षा में भी हिंदी भाषा प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किये जायें तथा सभी संस्थानों मेंहिंदी को प्रोत्साहित किया जाये। हिंदी ज्ञान, विज्ञान, चिंतन, परंपरा की भाषा एवं उचित माध्यम बने।भाषा का ज्ञान, ज्ञान का द्वार है। इस अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर, आइए, हम सभी संकल्प लें कि हम अपनी मातृभाषा का सम्मान करें क्योंकि

मातृभाषा का सम्मान, देश का सम्मान है,
हमारी स्वतंत्रता वहाँ है, मातृभाषा जहाँ है।

इसी सम्मान से हम अपने देश, भारत का सम्मान बढ़ाने में और नए भारत की संरचना करने में सफल होंगे।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के आयोजन के प्रकाशित समाचार

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर व्याख्यान आज

जागरण, सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 21 फरवरी को प्रातः 11.30 बजे से हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया हैं। जिसमें प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। कार्यक्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा की विशेष उपस्थिति रहेगी। कार्यक्रम की नोडल प्रभारी प्रो. चन्दा बेन ने बताया कि मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है।

विवि में व्याख्यान आज

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर 21 फरवरी को प्रातः 11:30 बजे से हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया है जिसमें प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देंगे. अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी. नोडल प्रभारी प्रो. चन्दा बेन ने बताया कि आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है. वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत करेगें.

विवि : अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर व्याख्यान आज

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में सोमवार को सुबह 11.30 बजे से अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया है। इसमें प्रख्यात भाषाविद और चिंतक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देंगे। अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। कार्यक्रम में प्रतियोगिताओं के विजताओं को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्यायान आज

सागर, देशबन्धु। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर आज प्रातः 11.30 बजे से 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया है जिसमें प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो.वृषभ प्रसाद जैन मुख्यवक्तव्य देंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। कार्यक्रम की नोडल प्रभारी प्रो.चंदा बेन ने बताया मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित 'आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं 'बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत भी किया जाएगा।

'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान 21 को

सागर, आचरण। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर दिनांक 21 फरवरी को प्रातः 11.30 बजे से 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया है जिसमें प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। कार्यक्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा की विशेष उपस्थिति रहेगी. कार्यक्रम की नोडल प्रभारी प्रो. चन्दा बेन ने बताया कि मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित 'आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं 'बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत भी किया जाएगा।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस परहमारी मातृभाषा वषय पर व्याख्यान आज

सागर (आरएनएन)। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 21 फरवरी को सुबह 11:30 बजे से हमारी मातृभाषा विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया है जिसमें प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। कार्यक्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो.अम्बिकादत्त शर्मा की विशेष उपस्थिति रहेगी कार्यक्रम की नोडल प्रभारी प्रो.चन्दा बेन ने बताया कि मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है विषय पर वाद.विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत भी किया जाएगा

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान 21 को

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर दिनांक 21 फरवरी को प्रातः 11.30 बजे से 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया है जिसमें प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। कार्यक्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा की विशेष उपस्थिति रहेगी. कार्यक्रम की नोडल प्रभारी प्रो. चन्दा बेन ने बताया कि मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित 'आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं 'बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत भी किया जाएगा।

मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव है : प्रो. जैन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो.वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है, व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है। वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आज़ादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है. भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है। हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है। कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये।

सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास को एक सूत्र में बांधती है भाषा: प्रो. नीलिमा गुप्ता

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो.नीलिमा ने कहा मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है। पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह 'माँ' सीखता है. इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता। यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया. भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हज़ार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं. इस तरह 22 प्रमुख भाषाएँ जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया. मातृभाषा की महत्ता बताते हुए कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज्यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है. सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास इन तीनों को भाषा ही बाँध कर रखती है। भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चन्दा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया और कहा स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है. उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो.अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा आज़ादी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है। पहला– राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा–वैचारिक स्वराज और तीसरा–भाषायी स्वराज की प्राप्ति भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्त्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उद्धरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ.राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ.आशुतोष ने ज्ञापित किया।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजन

मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव है : प्रो. वृषभ प्रसाद

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है. व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्वपूर्ण कारक है। उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आज़ादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है. भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है. हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं, आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात की जा रही है. भाषायी स्वतन्त्रता के साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी जुड़ी हुई है. इस बात को उन्होंने आंकड़ों और उदाहरणों के माध्यम से समझाया. उन्होंने कहा कि भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है. इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है, भारतीय भाषा के फॉण्ट निर्माण का काम आज विदेशी कम्पनियां कर रही है. भाषायी रूप से समृद्ध होने के बावजूद हम भारतीय भाषाओं के फॉण्ट निर्माण में भी पीछे है. भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है, उन्होंने कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये. उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है।

सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास को एक सूत्र में बांधती है भाषा : कुलपति

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है. पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह 'माँ' सीखता है. इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता, उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया. भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हज़ार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती है. इस तरह 22 प्रमुख भाषाएँ जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया. मातृभाषा की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज्यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है। सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास इन तीनों को भाषा ही बाँध कर रखती है. उन्होंने आकड़ों के माध्यम

से विश्व में हिंदी भाषा की स्थिति पर बात रखते हुए कहा कि आज दो तिहाई आबादी हिंदी समाचार पत्र पढ़ रही है व विश्व भर के सिनेमाघरों में हिंदी सिनेमा प्रदर्शित होती है. कोविडकाल के दौरान जब सभी चीज़ों का डिजिटलीकरण हुआ उसके साथ हिंदी भाषा की भी तकनीक में सहभागिता बढ़ी है. गूगल के आकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 तक हिंदी में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या अंग्रेज़ी से ज्यादा होगी. अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने हिंदी भाषा की विविधता को सरलता से समझाया और सभी को मातृभाषा के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए संकल्पित होने का संदेश दिया।

व्याख्यान के उपरांत मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित 'आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं 'बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया. कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ आशुतोष ने ज्ञापित किया. आयोजन में प्रो. बीआई. गुरु, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. उमेश पाटिल, डॉ राकेश सोनी, डॉ अलीम खान, डॉ हिमांशु, विवेक जिसारिया, डॉ. शशि सिंह, डॉ. अरविन्द, डॉ मुकेश साहू सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

आयोजन

सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास को एक सूत्र में बांधती है भाषाः गुप्ता

मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव हैः प्रो. वृषभ

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है. व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है. उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आज़ादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है. केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है. भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है. हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात की जा रही है. भाषायी स्वतन्त्रता के साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी जुड़ी हुई है। इस बात को उन्होंने आंकड़ों और उदाहरणों के माध्यम से समझाया. उन्होंने कहा कि भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है. इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है। भारतीय भाषा के फॉण्ट निर्माण का काम आज़ विदेशी कम्पनियां कर रही हैं. भाषायी रूप से समृद्ध होने के बावजूद हम भारतीय भाषाओं के फॉण्ट निर्माण में भी पीछे हैं। भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है. उन्होंने कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये। उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है. पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह 'माँ' सीखता है. इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता. उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया. भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हज़ार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं. इस तरह 22 प्रमुख भाषाएँ जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया. मातृभाषा की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज्यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है. सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास इन तीनों को भाषा ही बाँध कर रखती है. उन्होंने आकड़ों के माध्यम से विश्व में हिंदी भाषा की स्थिति पर बात रखते हुए कहा कि आज दो तिहाई आबादी हिंदी समाचार पत्र पढ़ रही है व विश्व भर के सिनेमाघरों में हिंदी सिनेमा प्रदर्शित होतो है. कोविडकाल के दौरान जब सभी चीज़ों का डिजिटलीकरण हुआ उसके साथ हिंदी भाषा की भी तकनीक में सहभागिता बढ़ी है. गूगल के आकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 तक हिंदी में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या अंग्रेज़ी से ज्यादा रहेगी. अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने हिंदी भाषा की विविधता को सरलता से समझाया और सभी को मातृभाषा के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए संकल्पित होने का संदेश दिया।

भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चन्दा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया और कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है. उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भाषा संबंधों को अधिक प्रगाढ़ बनाने का प्रावधान किया है. छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा कि इस वर्ष मातृभाषा दिवस आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आया है. आज़ादी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है। पहला- राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा-वैचारिक स्वराज और तीसरा-भाषायी स्वराज की प्राप्ति. भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है. उन्होंने प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उद्धरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया। व्याख्यान के उपरांत मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विवि स्तर पर आयोजित 'आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं 'बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया. कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ आशुतोष ने ज्ञापित किया।

आयोजन में प्रो. बीआई. गुरु, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. उमेश पाटिल, डॉ राकेश सोनी, डॉ अलीम खान, डॉ हिमांशु, विवेक विसारिया, डॉ शशि सिंह, डॉ. अरविन्द, डॉ मुकेश साहू सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

भाषा हमें पहचान देती है और पहचान भी बनाती है : प्रो. वृषभ प्रसाद जैन

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। भाषाविद और चिंतक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है। व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्वपूर्ण कारक है।

उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आदी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है। भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है और हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है। इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है। भारतीय भाषा के फांट निर्माण का काम आज विदेशी कंपनियां कर रही हैं। भाषायी रूप से समृद्ध होने के बावजूद हम भारतीय भाषाओं के फांट निर्माण में भी पीछे हैं। भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है।

सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास को एक-सूत्र में बांधती है भाषा: कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है। पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह मां सीखता है और इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया। भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएं केवल दस हार लोगों तक सीमित हैं, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं। इस तरह 22 प्रमुख भाषाएं जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया। उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है।

मातृभाषा दिवस पर विजेताओं को पुरस्कार देती कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

आदी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है: भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चन्दा बेन ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के बाद एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है। उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भाषा संबंधों को अधिक प्रगाढ़ बनाने का प्रावधान किया है। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा कि इस वर्ष मातृभाषा दिवस आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आया है। आदी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है। पहला- राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा-वैचारिक स्वराज और तीसरा-भाषायी स्वराज की प्राप्ति. भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्त्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेता सम्मानित

व्याख्यान के उपरांत मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है। विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डा. राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डा. आशुतोष ने ज्ञापित किया। आयोजन में प्रो. बीआई गुरु, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. उमेश पाटिल, डा. राकेश सोनी, डा. अलीम खान, डा. हिमांशु, विवेक विसारिया, डा. शशि सिंह, डा. अरविन्द, डा मुकेश साहू आदि उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विश्वविद्यालय की जवाहरलाल नेहरू लाइब्रेरी सभागार में व्याख्यान

'हिंदी नहीं सभी क्षेत्रीय भाषाओं की एक जैसी स्थिति, इनके व्याकरण और शब्दकोश निर्माण की जरूरत'

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में सोमवार को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हमारी मातृ-भाषाएं विषय पर व्याख्यान हुआ। इसमें भाषाविद और चिंतक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है। व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है। उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आजादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषाई परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिंदी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलुगु जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है। भारतीय भाषाओं का व्याकरण कोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है। हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात की जा रही है। भाषाई स्वतंत्रता के साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी जुड़ी हुई है। इस बात को उन्होंने आंकड़ों और उदाहरणों के माध्यम से समझाया। उन्होंने कहा कि भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है, इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है।

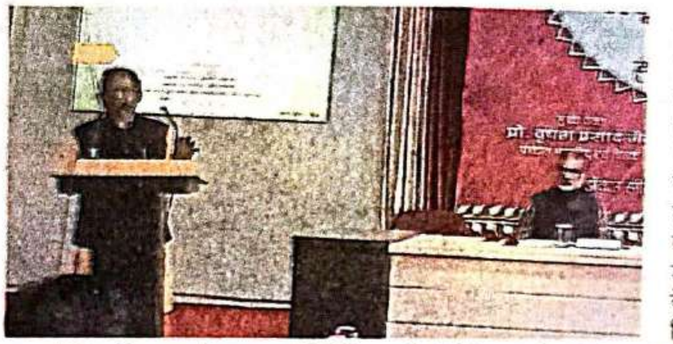

सागर | विश्वविद्यालय के सभागार में सेमिनार को संबोधित करते अतिथि।

भाषा विज्ञान और हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चंदा बेन ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के बाद एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है। उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भाषा संबंधों को अधिक प्रगाढ़ बनाने का प्रावधान किया है। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अंबिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा कि इस वर्ष मातृभाषा दिवस आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आया है। आजादी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है। पहला राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा वैचारिक स्वराज और तीसरा भाषाई स्वराज की प्राप्ति। भाषाई स्वराज मातृभाषा को महत्त्व देकर हीं प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कवि रवींद्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उद्धरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया। वहीं इस दौरान विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया। इस दौरान प्रो. नवीन कांगो, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. उमेश पाटिल, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. अलीम खान, डॉ. शशि सिंह, डॉ. मुकेश साहू सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी मौजूद थे। संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. राजेंद्र यादव ने किया। आभार डॉ. आशुतोष ने माना।

व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा महत्वपूर्ण कारक

नवभारत न्यूज

सागर 21 फरवरी. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया.

प्रख्यात भाषाविद और चिंतक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है. व्यक्तित्व निर्माण में मातृभावा भाषा एक महत्तवपूर्ण कारक है. उन्होंने कहा कि आजादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बड़ी हैं. केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है. पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह माँ सीखता है, इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता. उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया. भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हजार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं. भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चंदा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया. छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि पहला-राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा-वैचारिक स्वराज और तीसरा-भाषायी स्वराज की प्राप्ति, भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है.

वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया. संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ आशुतोष ने ज्ञापित किया.

मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव है : प्रो. जैन

सागर (आरएनएन)। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो वृषभ प्रसाद जैन ने मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है। व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा- भाषा एक महत्वपूर्ण कारक है। उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आजादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है। भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है। हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। उन्होंने कहा कि भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है। उन्होंने कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये। उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो नीलिमा ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है। पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह मां सीखता है। इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएं केवल दस हजार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं। इस तरह 22 प्रमुख भाषाएं जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया। मातृभाषा की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज्यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है। उन्होंने आकड़ों के माध्यम से विश्व में हिंदी भाषा की स्थिति पर बात रखते हुए कहा कि आज दो तिहाई आबादी हिंदी समाचार पत्र पढ़ रही है व विश्व भर के सिनेमाघरों में हिंदी सिनेमा प्रदर्शित होती है। गूगल के आकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 तक हिंदी में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या अंग्रेजी से ज्यादा रहेगी। अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने हिंदी भाषा की विविधता को सरलता से समझाया और सभी को मातृभाषा के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए संकल्पित होने का संदेश दिया। भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो चन्दा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया।

छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया उन्होंने प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उदाहरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया। व्याख्यान के उपरांत मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ आशुतोष ने ज्ञापित किया।

डॉ. हरिसिंह गौर विवि में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर व्याख्यान

'व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्वपूर्ण कारक'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। भाषाविद और चिंतक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य के रूप में मौजूद थे। उन्होंने कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है। व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्वपूर्ण कारक है।

उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आजादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है। भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोष अंग्रेजी भाषा से प्रभावित हैं। हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात की जा रही है।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है। पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह माँ सीखता है। इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया। भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है, जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हजार लोगों तक सीमित हैं, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं। इस तरह 22 प्रमुख भाषाएँ जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया।

हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चन्दा बेनने भी अपने विचार रखे। व्याख्यान के बाद विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में हुई, जिसमें विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया और आभार डॉ आशुतोष ने माना।

मातृभाषा से ही व्यक्तित्व निर्माण के साथ राष्ट्र की समृद्धि भी संभव : प्रो. वृषभ प्रसाद जैन

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजन

जागरण न्यूज, सागर

डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर सोमवार को हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो.वृषभ प्रसाद जैन ने मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है। व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्वपूर्ण कारक है। मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव है उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आजादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगु जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है। भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है। हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात की जा रही है। भाषायी स्वतन्त्रता के साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी जुड़ी हुई है। इस बात को उन्होंने आंकड़ों और उदाहरणों के माध्यम से समझाया। उन्होंने कहा कि भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है। इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है। भारतीय भाषा के फॉण्ट निर्माण का काम आज विदेशी कम्पनियां कर रही हैं। भाषायी रूप से समृद्ध होने के बावजूद हम भारतीय भाषाओं के फॉण्ट निर्माण में भी पीछे हैं। भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है। उन्होंने कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये। उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है।

एक सूत्र में बांधती है भाषा : प्रो. नीलिमा गुप्ता

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है। पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह मां सीखता है। इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया। भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएं केवल दस हजार लोगों तक सीमित हैं जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं। इस तरह 22 प्रमुख भाषाएं जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया। मातृभाषा की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज्यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है। सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास इन तीनों को भाषा ही बांधकर रखती है। उन्होंने आंकड़ों के माध्यम से विश्व में हिंदी भाषा की स्थिति पर बात रखते हुए कहा कि आज दो तिहाई आबादी हिंदी समाचार पत्र पढ़ रही है व विश्व भर के सिनेमाघरों में हिंदी सिनेमा प्रदर्शित होती हैं। कोविडकाल के दौरान जब सभी चीजों का डिजिटलीकरण हुआ।

डिजिटल सस्करणों में प्रकाशित आलेख

अमर उजाला राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक (डिजिटल संस्करण)

https://www.amarujala.com/columns/blog/international-mother-tongue-day-2022-how-new-challenge-emerged-for-mother-tongue

नागरिक न्यूज (डिजिटल संस्करण)

https://hindi.naagriknews.com/opinion/symbol-of-national-identity-international-mother-language-day/

तीन बत्ती न्यूज (डिजिटल संस्करण)

https://www.teenbattinews.com/2022/02/blog-post_42.html

सोशल मीडिया पर प्रसारित समाचार लिंक

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=148956790911305&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=148789640928020&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa